23

परमेश्वर की सामर्थ और बुद्धि

1 कुरिन्थियों 1:18-2:5

''परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा'' (1 कुरिन्थियों 1:30)।

बाइबल कहती है, '' ... मसीह परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है'' (1 कुरिन्थियों 1:24)। इस आयत से पता चलता है कि यीशु प्रभु है। परमेश्वर ने हमारी आवश्यकता की हर चीज़ यीशु में रखी है। हम उसमें सम्पूर्ण हैं (कुलुस्सियों 2:10)। मसीहियत मसीह ही तो है। मसीही व्यक्ति की सामर्थ परमेश्वर और मसीह में है न कि मनुष्य की विधि में। बहुतायत का जीवन केवल यीशु पर ही बनाया जा सकता है। मसीहियत मूल परिवर्तन लाती और इसकी मांग करती है। मनुष्य फेसलिफ्ट और मुरम्मत करवा सकता है, जबकि मन केवल परमेश्वर ही बदलता है। मसीहियत एक व्यक्ति है न कि कोई कार्यक्रम।

पाप हमारे जीवनों में से सुसमाचार की सामर्थ को निचोड़ लेता है (1 कुरिन्थियों 1:17; NIV)। मसीहियत मनुष्य को नई सृष्टि बनाकर उसमें नया जीवन और मन देती है (2 कुरिन्थियों 5:17; देखें यूहन्ना 3:1-7; गलातियों 2:20)। यीशु हमें पाप से मरने के लिए बुलाता है, ताकि हम परमेश्वर के लिए जी सकें।

क्रूस हमारे जीवन के साधारण चलन को उलटा-पुलटा कर देता है। यह कहता है कि जीना है तो हमें मरना आवश्यक है और पाना है तो हमें खोना आवश्यक है। यह कहता है कि ऊपर जाने का मार्ग नीचे को है और जो पीछे हैं वे आगे किए जाएंगे।

क्रूस पर दिया गया परमेश्वर अपने आप में विरोधाभास है। वह सर्वशक्तिमान है, परन्तु उसने अपने आप को मनुष्य बनने दिया है। मसीही व्यक्ति विरोधाभास है। वह ज़िंदा लाश है। वह मर चुका है, पर जीवित है! लोग जीने की लालसा करते हैं, पर जीवन के मार्ग के रूप में परमेश्वर उन्हें मृत्यु की पेशकश करता है। लोग विजय की कामना करते हैं, परन्तु क्रूस वह पराजय है जो विजय दिलाता है। लोग शान्ति चाहते हैं परन्तु क्रूस हमारे विवेक पर सुइयां चुभो कर हमें क्रूस की बात मानने में अगुआई देता है ताकि परमेश्वर की क्षमा पाकर हम शान्ति पर सकें। लोग शान्ति चाहते हैं परन्तु वह हमें उस युद्ध में ले जाता है जो शान्ति का कारण बनता है। लोग सुन्दरता को

सराहते हैं, परन्तु बेढंगा और बेढबा क्रूस उस सुन्दरता का वर्णन करता है, जो हर प्रकार की सुन्दरता से बढ़कर है। यदि हमें परमेश्वर की सामर्थ और बुद्धि चाहिए तो क्रूस पर मसीह के साथ आरम्भ करना आवश्यक है।

मसीह, परमेश्वर की सामर्थ

पौलुस ने कहा कि ''उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है'' (रोमियों 1:16)। क्रूस के माध्यम से पापियों को बचाने वाला परमेश्वर कैसा होगा? अनुग्रह और क्षमा करने वाला परमेश्वर! हमारे संसार के लोग कठोर शक्ति वाले को पूजते हैं। परमेश्वर की सामर्थ और हर प्रकार की शक्ति को मिलाकर भी उनसे बड़ी है। वह ज़बर्दस्त, सदा रहने वाली और करुणा से भरी है।

परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा संसार को बनाया और उसे बनाए रखता है (उत्पत्ति 1; 2; इब्रानियों 1:3)। उसकी सामर्थ उपाय करने वाली है, क्योंकि वह उन सबके साथ जो उससे प्रेम रखते हैं भलाई करने के लिए काम करता है (रोमियों 8:28)।

परन्तु परमेश्वर की सबसे बड़ी सामर्थ क्रूस पर दिखाई गई है। यह वह सामर्थ है, जिसका वर्णन निर्बलता के रूप में किया गया है! पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे'' (1 कुरिन्थियों 1:27)।

वह असीम नम्रता वाला परमेश्वर है। वह हमारे लिए उद्धार उपलब्ध कराता है, परन्तु उसे लेने या न लेने का अधिकार हमें देता है। वह हमारे जीवनों में अपने नियम थोपता नहीं, बल्कि द्वार पर खड़ा खटखटाता है (प्रकाशितवाक्य 3:20)। उसकी खुली छूट में, जो उसने हमें दी है, हम उसकी विनम्रता को देखते हैं। वह हमें ऐसे सिखाता है कि हम कुछ भी हथौड़े से मारकर बढ़ा नहीं सकते।

क्रूस पर मर रहे नंगे आदमी से बढ़कर लाचार कोई नहीं हो सकता। परन्तु परमेश्वर का सबसे बड़ा काम मनुष्य अर्थात अपने पुत्र के द्वारा क्रूस पर ही हुआ। क्रूस की सामर्थ पर ध्यान करें: कोई पापी ऐसा नहीं है, जिसके लिए मसीह न मरा हो और कोई पाप ऐसा नहीं है जिसे क्रूस उठा न सकता हो।

कलवरी पर यीशु की मृत्यु कोई अचानक होने वाली बात नहीं थी। यह संसार की सृष्टि से पहले कही गई सनातन सच्चाई का पूरा होना था। यीशु क्रूस पर केवल छह घण्टे नहीं रहा था। वह उस पर तैंतीस वर्ष तक रहा। पृथ्वी पर के अपने जीवन के दौरान वह हर रोज़ अपना क्रूस उठाता था।

यीशु हमारे उद्धार का कर्त्ता है। क्रूस हमारे उद्धार का कारण है। परमेश्वर की सामर्थ निर्बलता में सिद्ध हुई (2 कुरिन्थियों 12:6-10)। निर्बलता के द्वारा क्रूस पर दिए जाने के बावजूद यीशु परमेश्वर की सामर्थ को दिखाता है (2 कुरिन्थियों 13:4)। हम इसे केवल विनम्रता से ग्रहण ही कर सकते हैं। यदि हम इसे ठुकराते हैं तो ऐसा करके हम अपना अनन्तकालिक विनाश करेंगे।

जर्मन दार्शनिक तथा नास्तिक फ्रेडरिक नीत्शे शक्ति का दीवाना था। उसने यीशु को तुच्छ जाना, क्योंकि उसे लगा कि वह निर्बल था। नीत्शे मर चुका है, पर सुसमाचार का प्रचार आज भी हो रहा है।

मसीह, परमेश्वर की बुद्धि

पौलुस ने कहा कि यीशु ''परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा'' (1 कुरिन्थियों 1:30)। परमेश्वर की बड़ी सामर्थ उसकी बुद्धि के द्वारा ही चलती है। हमारे उद्धार के लिए उसकी बड़ी योजना, उसकी बड़ी बुद्धि का प्रदर्शन है।

अपनी बुद्धि में परमेश्वर ने मसीहियत के बीच में क्रूस रख दिया। हमें लगता है कि क्रूस व्यर्थ है, परन्तु परमेश्वर कहता है कि यह उसकी महिमा की भरपूरी है।

ढीठपन का पाप हर पाप की जड़ है (भजन संहिता 19:13; 2 पतरस 2:10)। मनुष्य को लगता है कि जैसे वह सोचता है वैसे ही परमेश्वर भी सोचता है या उसे भी वैसे ही सोचना चाहिए। मनोविज्ञान जीवन को *बेहतर* बनाने की प्रतिज्ञा करता है। पापियों को जीवन देता है, *चाहे लिख लें*। मुर्दों को जीवन की आवश्यकता है न कि पुनर्वास की (इफिसियों 2)। परमेश्वर की सामर्थ मुर्दों को जिलाने के लिए ही है। क्रूस पर ही परमेश्वर मुर्दों को जिलाता है।

मनुष्य युद्ध, निर्धनता और बीमारी से छुटकारा चाहता है। क्रूस पर मसीह हमें पाप से छुड़ाता है। मनुष्य युद्ध, दूसरों के साथ दुर्व्यवहार या सामाजिक बैचेनी का हल तब तक नहीं कर सकता, जब तक वह पाप से बचाया नहीं जा सकता। पाप का उपचार क्रूस पर ही हो सकता है।

पढ़े-लिखे घमण्डी व्यक्ति के लिए क्रूस अभी भी मूर्खता है। मनुष्य शक्ति ढूंढ़ता है बुद्धि नहीं, प्रकाश ढूंढ़ता है विश्वास नहीं। क्रूस को पकड़े रखने वाला घमण्डी व्यक्ति, घृणा और पाप को पकड़े नहीं रख सकता। क्रूस के पास खड़े होकर शेखी नहीं मारी जा सकती। क्रूस पर यीशु उस संसार को बचाने के लिए मरा जो बचाया नहीं जाना चाहता था। कितना अनोखा उद्धारकर्त्ता है! पौलुस ने मसीह और उसके क्रूस को छोड़ किसी और बात को न जानने का निश्चय कर लिया था (1 कुरिन्थियों 2:1-5)। इस पर विश्वास करें और लोगों को बताएं। हमें चाहिए कि परमेश्वर के बिना भक्त बनने और मसीह के बिना मसीही बनने और आत्मा के बिना आत्मिक बनने की कोशिश छोड़ दें।

केवल परमेश्वर ही मृत्यु का सामान (क्रूस) लेकर इसको पृथ्वी पर सबसे बड़ी प्रेरणा में बदल सकता था। क्रूस को छोड़ अपने आप से मरने वाली और कोई शक्ति नहीं है, और कोई बुद्धि नहीं है, जिसके साथ बहुतायत का जीवन जिया जा सके। यीशु ने कहा, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा'' (यूहन्ना 12:32)। वह लोगों को अपनी ओर खींच सकता था क्योंकि क्रूस परमेश्वर की बुद्धि और सामर्थ से दिया गया है।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!